अनुमान और कल्पना

प्रश्न 1. पुराने ज़माने में लोग यह क्यों सोचते थे कि अक्षर और भाषा की खोज ईश्वर ने की थी? अनुमान लगाओ और बताओ।

उत्तर–पुराने ज़माने में लोगों का ज्ञान सीमित था। उनकी ईश्वर के प्रति निष्ठा अधिक थी। उन्हें यह ज्ञान भी नहीं रहा होगा कि अक्षरों की खोज मानव भी कर सकता है। उनका विचार रहा होगा कि मानव इतना ज्ञानवान नहीं हो सकता कि वह अक्षरों की खोज कर सके। इसलिए वे सोचते होंगे कि अक्षरों की खोज ईश्वर ने की थी।

प्रश्न 2. अक्षरों के महत्त्व के साथ ही मनुष्य के जीवन में गीत, नृत्य और खेलों का भी महत्त्व है। **कक्षा में समूह में बातचीत करके इनके महत्त्व के बारे में जानकारी इकट्ठी करो और कक्षा में प्रस्तुत करो।**

उत्तर–इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे जीवन में अक्षरों का बहुत महत्त्व है, साथ ही हमें यह भी पता होना चाहिए कि मनुष्य के जीवन में गीत, नृत्य और खेलों का भी बहुत महत्त्व है। गीत हमारे जीवन में मनोरंजन का बहुत बड़ा साधन हैं। इनसे हमें समाज और संस्कृति की परंपराओं का भी पता चलता है। लोक-गीतों में जीवन के विभिन्न रूपों को देखा जा सकता है।

नृत्य भी लोक कलाओं का अभिन्न अंग हैं। इनसे मनोरंजन तो होता है, समाज और संस्कृति की परंपराओं का दिग्दर्शन भी होता है।

खेल और नृत्य से मनोरंजन तो होता ही है, हमारे लिए आवश्यक व्यायाम का भी ये उत्तम साधन हैं। इतना ही नहीं, इनसे हमारा जीवन अनुशासित भी होता है। साथ ही इनसे आपस में मिल-जुलकर काम करने की भावना भी पैदा होती है। इस प्रकार नृत्य, गीत और खेल हमारे जीवन में उतने ही महत्त्वपूर्ण हैं जितने कि अक्षर।

इसे कक्षा में सभी विद्यार्थी इस विषय पर सामूहिक चर्चा करें।

प्रश्न 3. क्या होता अगर ...

(क) *हमारे पास अक्षर न होते*

(ख) *भाषा न होती*

उत्तर–*(क) हमारे पास अक्षर न होते*–यदि हमें अक्षरों का ज्ञान न होता तो आज हमें जीवन में जितन
प्राप्त हैं, उनका शायद एक प्रतिशत भी हमें उपलब्ध न होता। हम अज्ञान के घोर अंधकार में जी रहे होते। ह
की भी कोई जानकारी न होती। हम यह भी न जान पाते कि पिछले हज़ारों सालों में आदमी कैसे रहत
क्या-क्या करता था? उसके जीवन में परिवर्तन आया या नहीं? अक्षर ज्ञान यदि न होता तो हम असभ्य ही
मनुष्य अपने विचारों को संजो न पाता। उसके विचार दूसरी पीढ़ी इस्तेमाल न कर पाती! आज जीवन में
विकास देखते हैं, उसका प्रमुख कारण अक्षर ज्ञान ही है। संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि अक्षर ज्ञा
हमारा जीवन पशुओं के समान ही बना रहता।

(ख) भाषा न होती–यदि भाषा न होती तो लोगों के मन में उठने वाले विचारों का आपसी आदान
हो पाता। भाषा के द्वारा ही व्यक्ति अपनी बात कहने व दूसरे की बात को समझने में सक्षम हो पाता है। लि
के प्रयोग द्वारा विचारों को स्थायी रूप भी प्रदान किया जाता है। अक्षर ज्ञान भी तो भाषा पर ही निर्भर है
ही तो अक्षरों का प्रयोग किया जाता है।

प्रश्न 1. मनुष्य की प्रगति का क्या रहस्य है?

उत्तर—मनुष्य की प्रगति का रहस्य है उसका अक्षर ज्ञान। अक्षर ज्ञान के साथ ही मानव का विकास प्रारंभ हो गया था। मनुष्य के ज्ञान-विज्ञान को आसानी से समझना, उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना व इतिहास की रचना अक्षर ज्ञान से ही संभव हो पाया है। अतएव संक्षेप में यह कहना बिलकुल अनुचित नहीं कि अक्षर ज्ञान के बिना मनुष्य असभ्य ही बना रहता है।

प्रश्न 2. आपके विचार में अक्षरों की खोज किसने की है—ईश्वर ने या व्यक्ति ने? तर्क देकर आप अपनी बात की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—मेरे विचार में अक्षरों की खोज व्यक्ति ने की है, ईश्वर ने नहीं। यदि अक्षर की खोज ईश्वर ने की होती तो सृष्टि के आरंभ के साथ यह खोज आदमी तक पहुँच जाती और आदमी उसका इस्तेमाल करना शुरू कर देता। पर ऐसा नहीं हुआ। सृष्टि के आरंभ के हज़ारों-लाखों वर्ष के बाद ही आदमी अक्षर ज्ञान प्राप्त कर सका। अक्षरों की खोज में आदमी को न जाने कितना समय लगा होगा क्योंकि सबसे पहले तो उसने अपने भाव चित्रों के द्वारा ही प्रकट करने शुरू किए थे। धीरे-धीरे चित्रों के द्वारा ही भाव-संकेत अस्तित्व में आए।

प्रश्न 3. आज हज़ारों पुस्तकें और समाचार-पत्र छपने लगे हैं। यह कैसे संभव हो पाया है?

उत्तर—आज हज़ारों पुस्तकें और समाचार-पत्र हमें उपलब्ध हैं। इनकी उपलब्धि अक्षर-खोज के कारण ही संभव हो पाई है। यदि आदमी अक्षर-खोज न करता, तो आज हज़ारों पुस्तकें और समाचार-पत्र भी न छप पाते। मनुष्य भाषा के मौखिक रूप का ही प्रयोग करता रहता।

प्रश्न 4. अक्षरों की खोज को मनुष्य की सबसे बड़ी खोज क्यों माना गया है?

उत्तर—सच्चाई तो यह है कि अक्षरों की खोज ने मानव जीवन को बिलकुल बदलकर रख दिया है। उसने पिछले पाँच-छह हजार सालों में जितनी प्रगति की है, उससे पहले के हज़ारों सालों में उसने नाममात्र ही प्रगति की थी। अक्षर-खोज के कारण ही वह सभ्य बन पाया, इतिहास की रचना कर सका और एक पीढ़ी के ज्ञान और विचार दूसरी पीढ़ी तक पहुँचा पाया। अक्षर-खोज ने मानव को सभ्य बनाया और उसे प्रगति की राह दिखाई। इसीलिए अक्षरों की खोज को मनुष्य की सबसे बड़ी खोज माना गया है।